



दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) के अनुप्रयोग के स्तर एवं उपयोग की सीमा का अध्ययन

अपर्णा एरियल

शोधार्थी, सेम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, रायसेन

डॉ. पूजा करैया

शोध निर्देशक, सेम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, रायसेन

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के स्तर एवं उसके उपयोग की सीमा का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई तथा चयनित पुस्तकालयों के कर्मचारियों और पाठकों से प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़े एकत्रित किए गए। परिणामों से ज्ञात हुआ कि पुस्तकालयों में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता असमान है तथा सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सेवाओं का उपयोग अपेक्षाकृत सीमित है। वित्तीय संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव और तकनीकी जागरूकता की कमी प्रमुख बाधाओं के रूप में उभरकर सामने आई। यह अध्ययन जिला स्तर के पुस्तकालयों की तकनीकी स्थिति को समझने में सहायक है।

मुख्य शब्द: सूचना प्रौद्योगिकी, पुस्तकालय, दमोह ज़िला, तकनीकी सेवाएँ, उपयोग स्तर

1. प्रस्तावना

सूचना मानव समाज के विकास की आधारशिला मानी जाती है। मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही ज्ञान के संरक्षण, संकलन और प्रसार की आवश्यकता महसूस की जाती रही है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए पुस्तकालयों की अवधारणा विकसित हुई। पुस्तकालय सदैव से ज्ञान, शिक्षा, संस्कृति और अनुसंधान के केंद्र रहे हैं। समय के साथ-साथ समाज की आवश्यकताओं, तकनीकी प्रगति और ज्ञान के स्वरूप में परिवर्तन होता गया, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव पुस्तकालयों की संरचना, सेवाओं और कार्यप्रणाली पर भी पड़ा।¹ वर्तमान युग को सूचना युग कहा जाता है, जहाँ ज्ञान की मात्रा अत्यधिक बढ़ चुकी है और उसकी उपलब्धता तीव्र गति से हो रही है। इस युग में परंपरागत माध्यमों के साथ-साथ तकनीकी



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

साधनों ने सूचना के संग्रहण, संगठन और वितरण को सरल, त्वरित और व्यापक बना दिया है। पुस्तकालय अब केवल पुस्तकों के भंडार नहीं रह गए हैं, बल्कि वे ऐसे सूचना केंद्र बन चुके हैं जहाँ विविध प्रकार की सूचनाएँ विभिन्न माध्यमों से उपलब्ध कराई जाती हैं।²

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने पुस्तकालय सेवाओं को एक नई दिशा प्रदान की है। इसके माध्यम से पुस्तकालयों में सूचनाओं का संकलन, वर्गीकरण, अनुक्रमण, भंडारण और पुनर्प्राप्ति पहले की अपेक्षा अधिक सुव्यवस्थित एवं प्रभावी हो गई है।³ तकनीकी साधनों के प्रयोग से पुस्तकालयों की कार्यक्षमता में वृद्धि हुई है तथा पाठकों को अधिक सटीक, त्वरित और विश्वसनीय सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं।⁴

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ पुस्तकालय शिक्षा, शोध, सामाजिक जागरूकता और आजीवन अधिगम के प्रमुख साधन हैं। ग्रामीण, अर्ध-शहरी और शहरी क्षेत्रों में स्थित पुस्तकालय समाज के विभिन्न वर्गों की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। विशेष रूप से जिला स्तर के पुस्तकालय स्थानीय जनता के लिए ज्ञान और सूचना का सुलभ स्रोत होते हैं।⁵ मध्य प्रदेश राज्य में जिला पुस्तकालय शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ये पुस्तकालय विद्यार्थियों, प्रतियोगी परीक्षा अभ्यर्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों तथा सामान्य पाठकों को सूचना सेवाएँ प्रदान करते हैं। ऐसे में इन पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग किस स्तर तक किया जा रहा है, यह जानना आवश्यक हो जाता है।⁶

दमोह ज़िला मध्य प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र में स्थित एक महत्वपूर्ण ज़िला है। यहाँ शैक्षणिक संस्थानों, विद्यालयों, महाविद्यालयों और पुस्तकालयों की उपस्थिति है। जिले के पुस्तकालय स्थानीय जनसंख्या की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किंतु बदलते समय के साथ पुस्तकालयों से अपेक्षाएँ भी बढ़ गई हैं। आज पाठक केवल मुद्रित पुस्तकों तक सीमित नहीं रहना चाहते, बल्कि वे त्वरित, विविध और अद्यतन सूचना की अपेक्षा करते हैं।⁷

सूचना प्रौद्योगिकी ने पाठकों की सूचना खोज प्रवृत्ति को भी प्रभावित किया है। आज पाठक ऐसी सेवाओं की अपेक्षा करते हैं जिनके माध्यम से वे कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकें। इस संदर्भ में पुस्तकालयों में तकनीकी साधनों का समावेश अत्यंत आवश्यक हो गया है। यदि पुस्तकालय तकनीकी परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को अद्यतन नहीं करते, तो उनकी प्रासंगिकता धीरे-धीरे कम हो सकती है।⁸



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग विभिन्न रूपों में किया जा सकता है, जैसे पुस्तकों का कंप्यूटरीकृत अभिलेखन, पाठक पंजीकरण, परिसंचरण सेवाएँ, संदर्भ सेवाएँ, सूचनाओं का डिजिटल रूप में संरक्षण, तथा नेटवर्क आधारित सूचना उपलब्धता। इन सभी पहलुओं का प्रभावी उपयोग पुस्तकालय की सेवाओं की गुणवत्ता को बढ़ा सकता है।⁹ हालाँकि, यह भी देखा गया है कि जिला स्तर के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग समान रूप से नहीं हो पा रहा है। कुछ पुस्तकालयों में तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध होने के बावजूद उनका पूर्ण उपयोग नहीं किया जा रहा, जबकि कुछ पुस्तकालयों में संसाधनों की कमी के कारण तकनीकी सेवाएँ सीमित रह जाती हैं। इस स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के स्तर और उसकी उपयोग सीमा का व्यवस्थित अध्ययन किया जाए।¹⁰

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में यह माना जाता है कि तकनीकी साधनों का प्रभावी उपयोग तभी संभव है जब पुस्तकालय कर्मियों को पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त हो और उपयोगकर्ताओं को इन सेवाओं के प्रति जागरूक किया जाए। बिना प्रशिक्षित मानव संसाधन के तकनीकी सुविधाएँ निष्प्रभावी हो जाती हैं। इसी प्रकार, यदि उपयोगकर्ता तकनीकी सेवाओं के उपयोग से परिचित नहीं हैं, तो पुस्तकालय द्वारा किए गए प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाते।¹¹ दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग का अध्ययन इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि यह स्थानीय स्तर पर सूचना सेवाओं की वास्तविक स्थिति को उजागर कर सकता है। महानगरों और बड़े शैक्षणिक संस्थानों में पुस्तकालयों के तकनीकी विकास पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, किंतु जिला और ग्रामीण स्तर के पुस्तकालयों पर केंद्रित अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं। इस कारण नीति निर्धारण और विकास योजनाओं के लिए आवश्यक तथ्यात्मक आधार कमजोर रह जाता है।¹²

सूचना प्रौद्योगिकी का पुस्तकालयों में उपयोग केवल सेवा विस्तार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सूचना तक समान पहुँच सुनिश्चित करने का भी एक माध्यम है। तकनीकी साधनों के माध्यम से पुस्तकालय दूरदराज़ के क्षेत्रों में रहने वाले पाठकों तक भी सूचना पहुँचा सकते हैं। इससे ज्ञान का विकेंद्रीकरण संभव होता है और सामाजिक असमानता को कम करने में सहायता मिलती है।¹³

पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग का अध्ययन करते समय यह भी आवश्यक है कि यह देखा जाए कि कौन-कौन सी सेवाएँ तकनीकी माध्यम से उपलब्ध कराई जा रही



हैं, उनका उपयोग कितनी बार किया जा रहा है, और पाठकों की संतुष्टि का स्तर क्या है। इसके साथ-साथ यह भी महत्वपूर्ण है कि तकनीकी सुविधाओं के संचालन में आने वाली समस्याओं और चुनौतियों को समझा जाए। दमोह ज़िले के संदर्भ में यह अध्ययन पुस्तकालयों की वर्तमान स्थिति, उपलब्ध तकनीकी संसाधनों, उनके उपयोग की सीमा तथा भविष्य की संभावनाओं को समझने में सहायक हो सकता है। यह अध्ययन पुस्तकालय प्रशासन, नीति निर्धारकों और पुस्तकालय विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास के इस युग में पुस्तकालयों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे अपनी पारंपरिक भूमिका के साथ-साथ तकनीकी भूमिका को भी सुदृढ़ करें। जिला स्तर के पुस्तकालय यदि समय के अनुरूप स्वयं को परिवर्तित नहीं करते, तो वे पाठकों की बदलती आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं हो पाएँगे। इसी संदर्भ में दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के स्तर और उपयोग की सीमा का अध्ययन विशेष महत्व रखता है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

1. दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के वर्तमान स्तर का अध्ययन करना।
2. पुस्तकालयों में उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सेवाओं की उपयोग सीमा का विश्लेषण करना।
3. सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से संबंधित प्रमुख समस्याओं एवं बाधाओं की पहचान करना।

3. परिकल्पनाएँ

1. दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग का स्तर पुस्तकालय से पुस्तकालय में भिन्न पाया जाता है।
2. सूचना प्रौद्योगिकी आधारित पुस्तकालय सेवाओं के उपयोग की सीमा पाठकों की जागरूकता एवं तकनीकी ज्ञान पर निर्भर करती है।
3. पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव तथा तकनीकी बाधाएँ प्रमुख रूप से प्रभाव डालती हैं।

4. अनुसंधान पद्धति



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति को अपनाया गया है। इस पद्धति का उद्देश्य दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के वर्तमान स्वरूप, उसके उपयोग की सीमा तथा संबंधित समस्याओं का तथ्यात्मक अध्ययन करना है।

अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों पर विशेष बल दिया गया है, ताकि पुस्तकालयों की वास्तविक स्थिति को प्रत्यक्ष रूप से समझा जा सके। अनुसंधान पद्धति के अंतर्गत पुस्तकालय कर्मचारियों एवं पाठकों से प्राप्त जानकारी का व्यवस्थित संकलन एवं विश्लेषण किया गया है।

4.1 नमूना चयन

अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत दमोह ज़िले के चयनित पुस्तकालयों को शामिल किया गया है। नमूना चयन हेतु उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि अपनाई गई है, जिससे ऐसे पुस्तकालयों का चयन किया जा सके जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी का किसी न किसी रूप में उपयोग किया जा रहा हो।

नमूने में सार्वजनिक पुस्तकालय, शैक्षणिक संस्थानों से संबद्ध पुस्तकालय तथा अन्य चयनित पुस्तकालयों को सम्मिलित किया गया है।

इसके अतिरिक्त, प्रत्येक चयनित पुस्तकालय से पुस्तकालय प्रभारी, कर्मचारी तथा नियमित पाठकों को नमूने के रूप में शामिल किया गया है, ताकि विभिन्न दृष्टिकोणों से आंकड़े प्राप्त किए जा सकें।

4.2 आंकड़ा संग्रह विधि

अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह मुख्य रूप से प्रश्नावली विधि द्वारा किया गया है। प्रश्नावली के माध्यम से पुस्तकालयों में उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी संसाधनों, उनके उपयोग, सेवाओं की प्रकृति तथा उपयोग में आने वाली समस्याओं से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है।

आवश्यकतानुसार अनौपचारिक बातचीत एवं अवलोकन विधि का भी उपयोग किया गया, जिससे प्रश्नावली से प्राप्त जानकारी को और अधिक स्पष्ट किया जा सके।

द्वितीयक आंकड़ों के लिए पुस्तकों, शोध पत्रों, पत्रिकाओं एवं संबंधित दस्तावेज़ों का अध्ययन किया गया।

4.3 विश्लेषण की प्रक्रिया



एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण सरल सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया है। आंकड़ों को सारणीबद्ध कर उनका प्रतिशत के रूप में विश्लेषण किया गया, जिससे सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के स्तर एवं उपयोग की सीमा को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जा सके। विश्लेषण की प्रक्रिया में विभिन्न तालिकाओं के माध्यम से पुस्तकालयों की तुलना की गई है तथा उपयोगकर्ताओं की प्रतिक्रियाओं का वर्गीकरण कर उनका अध्ययन किया गया है।

इस प्रक्रिया का उद्देश्य आंकड़ों को सरल, स्पष्ट और अर्थपूर्ण रूप में प्रस्तुत करना रहा है।

4.4 प्रश्नावली निर्माण

प्रश्नावली का निर्माण अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। प्रश्नावली में बंद एवं खुले दोनों प्रकार के प्रश्न सम्मिलित किए गए हैं।

प्रश्नावली के प्रमुख भाग निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित रहे—

- पुस्तकालय में उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी संसाधन
- तकनीकी सेवाओं का उपयोग स्तर
- पुस्तकालय कर्मचारियों का तकनीकी ज्ञान
- पाठकों द्वारा तकनीकी सेवाओं का उपयोग
- सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित समस्याएँ एवं बाधाएँ

प्रश्नावली को सरल एवं स्पष्ट भाषा में तैयार किया गया, जिससे उत्तरदाता बिना किसी कठिनाई के अपने उत्तर दे सकें।

5. परिणाम एवं विश्लेषण

तालिका 5.1 दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी संसाधनों की उपलब्धता

सूचना प्रौद्योगिकी संसाधन	उपलब्ध पुस्तकालय	अनुपलब्ध पुस्तकालय	कुल पुस्तकालय
संगणक प्रणाली	12	8	20
इंटरनेट सुविधा	10	10	20
स्वचालित पुस्तक अभिलेख	8	12	20



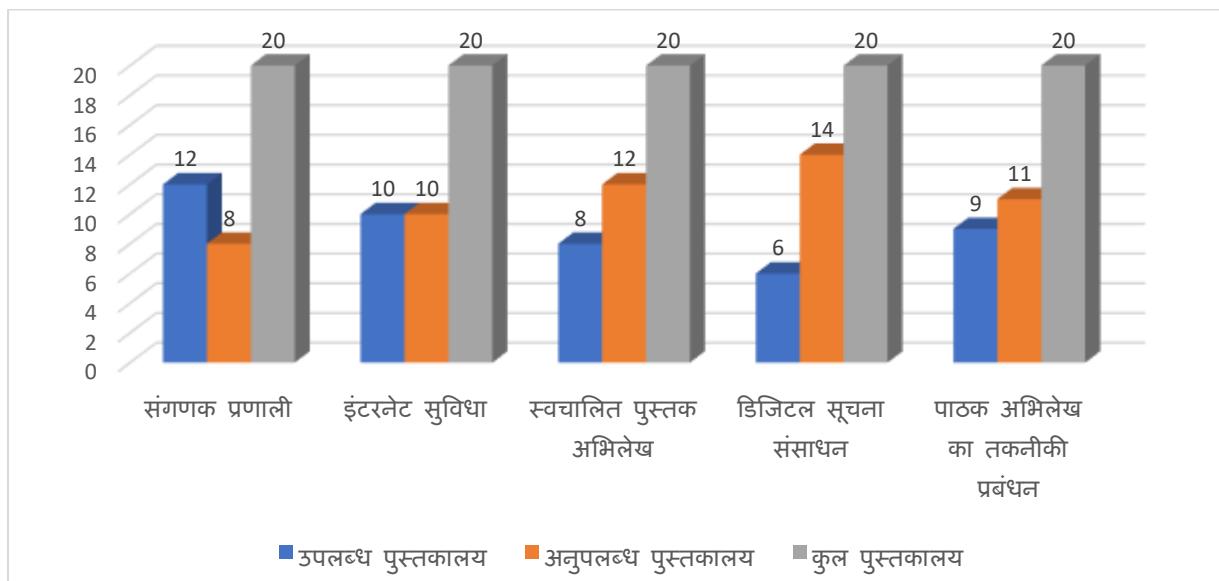
Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

डिजिटल सूचना संसाधन	6	14	20
पाठक अभिलेख का तकनीकी प्रबंधन	9	11	20



विश्लेषण

इस तालिका से दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति स्पष्ट रूप से सामने आती है। आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि सभी पुस्तकालयों में तकनीकी संसाधन समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं। जहाँ कुछ पुस्तकालयों में संगणक प्रणाली और इंटरनेट जैसी मूलभूत सुविधाएँ मौजूद हैं, वहीं अनेक पुस्तकालय इन सुविधाओं से वंचित हैं। स्वचालित पुस्तक अभिलेख एवं डिजिटल सूचना संसाधनों की उपलब्धता अपेक्षाकृत कम पाई गई है, जिससे यह संकेत मिलता है कि अधिकांश पुस्तकालय अभी भी परंपरागत कार्यप्रणाली पर निर्भर हैं।

यह स्थिति दर्शाती है कि पुस्तकालयों के बीच तकनीकी विकास का स्तर असमान है। कुछ पुस्तकालय तकनीकी रूप से उन्नत होने की दिशा में अग्रसर हैं, जबकि अन्य पुस्तकालयों में संसाधनों की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। पाठक अभिलेख का तकनीकी प्रबंधन भी सभी पुस्तकालयों में समान रूप से लागू नहीं है, जिससे सेवाओं की गुणवत्ता प्रभावित



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

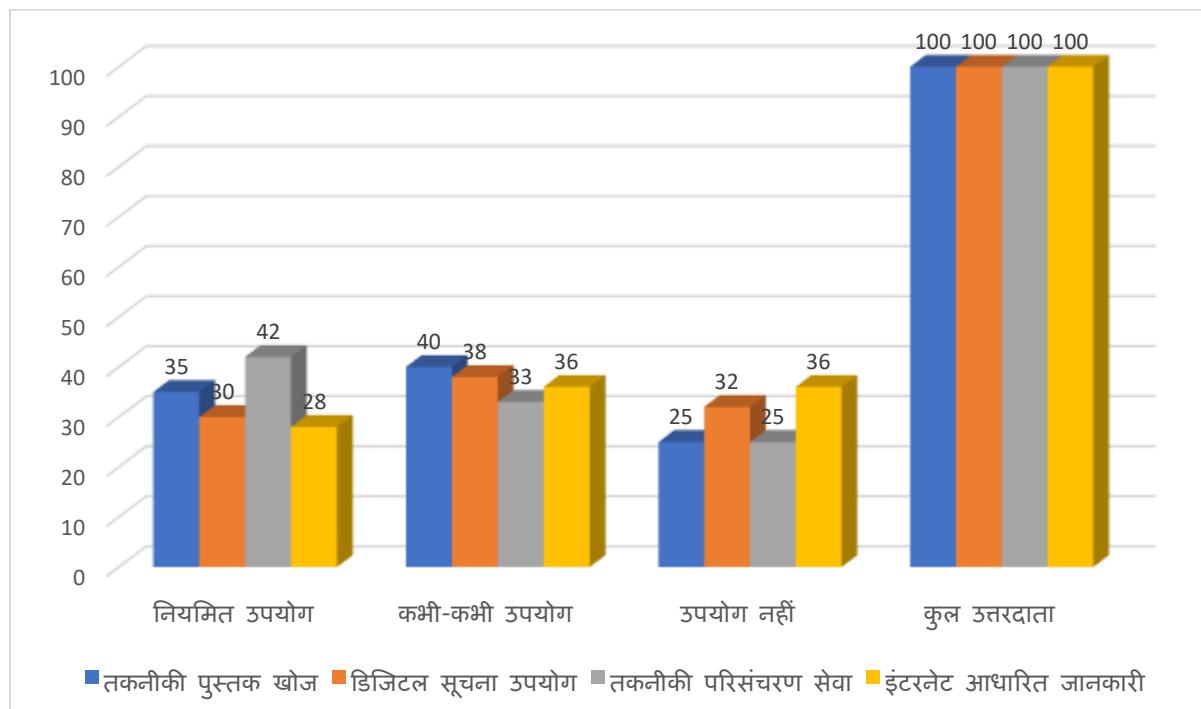
Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

हो सकती है। इस प्रकार, तालिका पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी संसाधनों की असंतुलित उपलब्धता को उजागर करती है।

तालिका 5.2 पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सेवाओं के उपयोग की सीमा

सेवा का प्रकार	नियमित उपयोग	कभी-कभी उपयोग	उपयोग नहीं	कुल उत्तरदाता
तकनीकी पुस्तक खोज	35	40	25	100
डिजिटल सूचना उपयोग	30	38	32	100
तकनीकी परिसंचरण सेवा	42	33	25	100
इंटरनेट आधारित जानकारी	28	36	36	100





Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

विश्लेषण

तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पुस्तकालयों में उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सेवाओं का उपयोग सभी पाठकों द्वारा समान रूप से नहीं किया जा रहा है। नियमित उपयोग करने वाले पाठकों की संख्या सीमित है, जबकि बड़ी संख्या में पाठक इन सेवाओं का केवल कभी-कभी उपयोग करते हैं या बिल्कुल भी उपयोग नहीं करते। यह स्थिति दर्शाती है कि तकनीकी सेवाएँ उपलब्ध होने के बावजूद उनका पूर्ण लाभ नहीं उठाया जा रहा है।

तकनीकी पुस्तक खोज एवं डिजिटल सूचना उपयोग जैसी सेवाओं का उपयोग अपेक्षाकृत कम पाया गया है, जिससे यह संकेत मिलता है कि पाठकों में तकनीकी जागरूकता की कमी हो सकती है। वहीं तकनीकी परिसंचरण सेवा का उपयोग कुछ अधिक दिखाई देता है, जो यह दर्शाता है कि जहाँ सेवाएँ सरल और प्रत्यक्ष हैं, वहाँ उपयोग अपेक्षाकृत बेहतर है। यह तालिका पाठकों की सूचना खोज आदतों और तकनीकी सेवाओं के उपयोग व्यवहार को समझने में सहायक सिद्ध होती है।

तालिका 5.3 पुस्तकालय कर्मचारियों का सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी ज्ञान स्तर

ज्ञान स्तर	कर्मचारी संख्या	प्रतिशत
उच्च स्तर	6	20
मध्यम स्तर	12	40
निम्न स्तर	12	40
	30	100

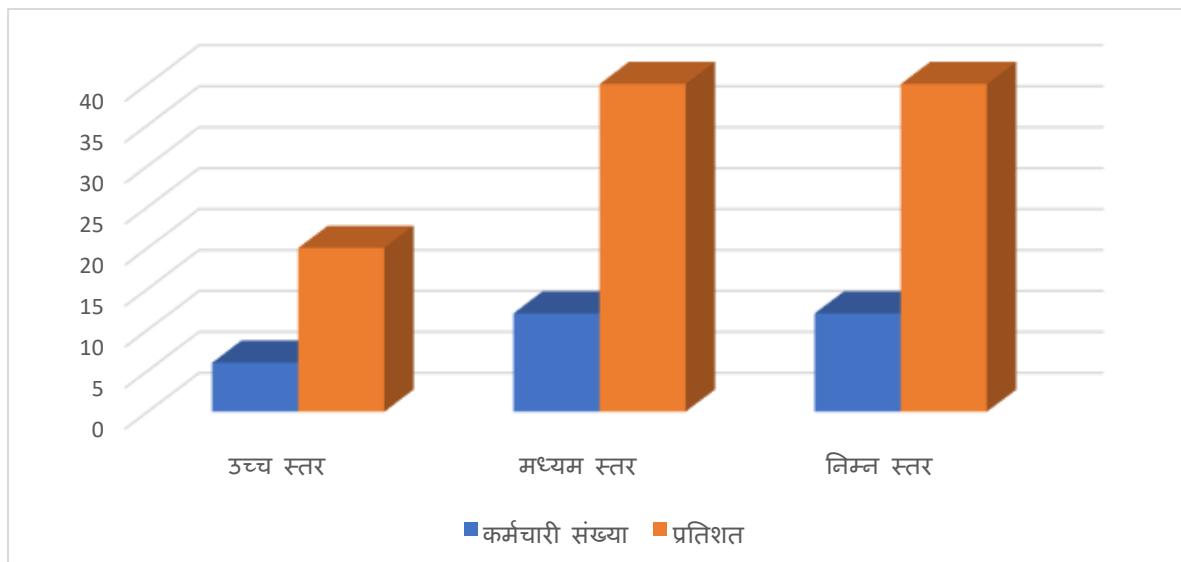


Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176



विश्लेषण

यह तालिका पुस्तकालय कर्मचारियों के सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी ज्ञान स्तर को प्रस्तुत करती है। आंकड़ों के अनुसार, उच्च स्तर का तकनीकी ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है, जबकि मध्यम एवं निम्न स्तर के ज्ञान वाले कर्मचारियों की संख्या अधिक है। यह स्थिति दर्शाती है कि पुस्तकालयों में कार्यरत अधिकांश कर्मचारी तकनीकी विषय से पूरी तरह दक्ष नहीं हैं।

तकनीकी ज्ञान का स्तर पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को सीधे प्रभावित करता है। यदि कर्मचारियों को तकनीकी उपकरणों एवं प्रणालियों का समुचित प्रशिक्षण नहीं मिलता, तो उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी उपयोग संभव नहीं हो पाता। यह तालिका इस तथ्य को उजागर करती है कि पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ाने के लिए कर्मचारियों के प्रशिक्षण और क्षमता विकास की आवश्यकता है। कर्मचारियों की तकनीकी दक्षता का स्तर पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

तालिका 5.4 सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग में आने वाली प्रमुख समस्याएँ

समस्या	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
वित्तीय संसाधनों की कमी	78	78
प्रशिक्षण का अभाव	72	72
तकनीकी उपकरणों की कमी	65	65



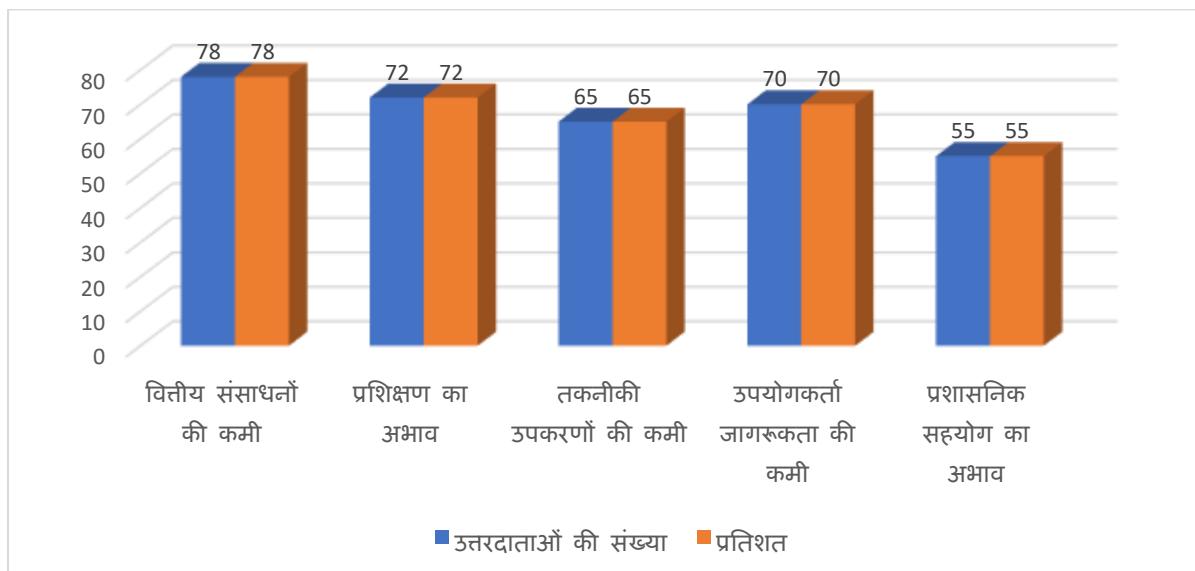
Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

उपयोगकर्ता जागरूकता की कमी	70	70
प्रशासनिक सहयोग का अभाव	55	55



विश्लेषण

तालिका से स्पष्ट होता है कि पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के मार्ग में अनेक बाधाएँ विद्यमान हैं। वित्तीय संसाधनों की कमी सबसे प्रमुख समस्या के रूप में सामने आती है, जिसके कारण आवश्यक तकनीकी उपकरणों की उपलब्धता सीमित हो जाती है। इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षण का अभाव भी एक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में उभरकर सामने आया है, जिससे कर्मचारियों की तकनीकी दक्षता प्रभावित होती है।

उपयोगकर्ता जागरूकता की कमी भी एक गंभीर समस्या के रूप में दिखाई देती है, जिससे तकनीकी सेवाओं का उपयोग अपेक्षित स्तर तक नहीं हो पाता। प्रशासनिक सहयोग का अभाव और तकनीकी उपकरणों की कमी भी पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार को प्रभावित करती है। यह तालिका पुस्तकालयों में विद्यमान वास्तविक चुनौतियों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती है और यह दर्शाती है कि तकनीकी विकास केवल संसाधनों की उपलब्धता पर नहीं, बल्कि अनेक अन्य कारकों पर भी निर्भर करता है।



Kavya Setu

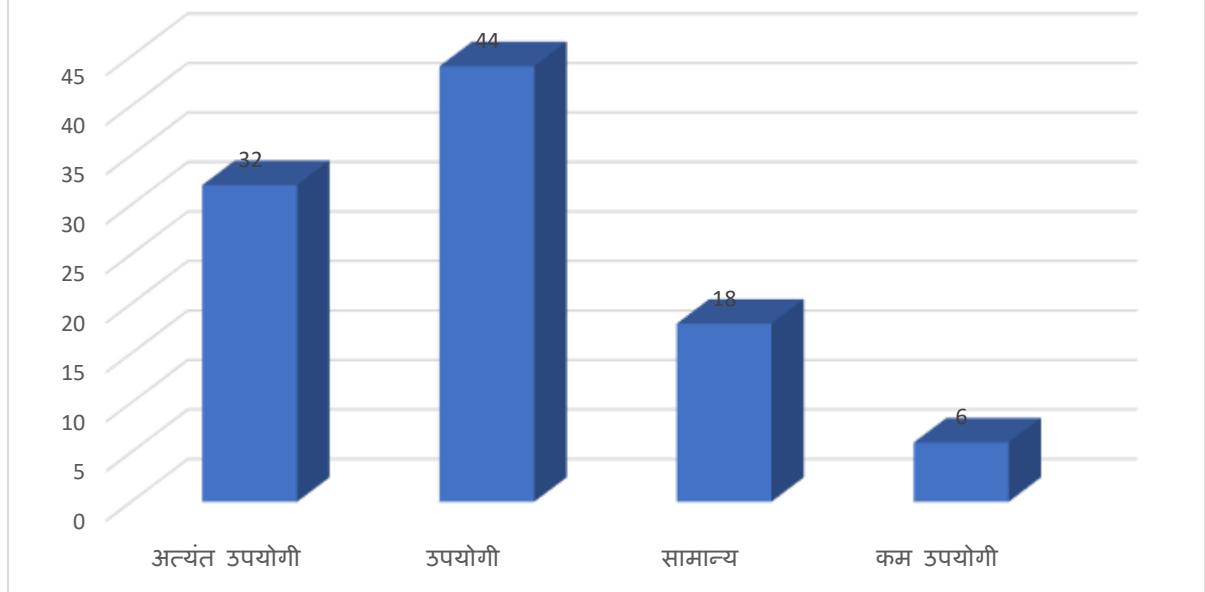
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

तालिका 5.5 सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति पाठकों की धारणा

प्रतिक्रिया	पाठक संख्या	प्रतिशत
अत्यंत उपयोगी	32	32
उपयोगी	44	44
सामान्य	18	18
कम उपयोगी	6	6
	100	100



विश्लेषण

तालिका से यह ज्ञात होता है कि अधिकांश पाठक सूचना प्रौद्योगिकी को उपयोगी या अत्यंत उपयोगी मानते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि पाठकों के मन में तकनीकी सेवाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण मौजूद है। इसके बावजूद, उपयोग का स्तर अपेक्षाकृत सीमित पाया गया है, जो यह संकेत देता है कि धारणा और वास्तविक उपयोग के बीच अंतर है।

कुछ पाठकों द्वारा तकनीकी सेवाओं को सामान्य या कम उपयोगी माना जाना यह दर्शाता है कि सभी पाठकों की आवश्यकताएँ और अपेक्षाएँ समान नहीं हैं। संभव है कि तकनीकी सेवाओं की जानकारी का अभाव, उपयोग में कठिनाई या संसाधनों की सीमित उपलब्धता इसके पीछे कारण हों। यह तालिका पाठकों की मानसिकता और उनकी सूचना



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

आवश्यकताओं को समझने में सहायक है तथा यह संकेत देती है कि तकनीकी सेवाओं की स्वीकार्यता तो है, किंतु उनका प्रभावी उपयोग अभी भी सीमित है।

तालिका 5.6 परिकल्पना परीक्षण तालिका

परिकल्पना	परीक्षण हेतु आधार (संबंधित तालिकाएँ)	प्रमुख संकेत/प्रवृत्ति (आँकड़ों के आधार पर)	परिकल्पना की स्थिति
दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग का स्तर पुस्तकालय से पुस्तकालय में भिन्न पाया जाता है।	तालिका 1	तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता में स्पष्ट असमानता: कुछ पुस्तकालयों में संगणक/इंटरनेट उपलब्ध, कई में अनुपलब्ध; डिजिटल संसाधन व स्वचालित अभिलेख सीमित।	स्वीकृत
सूचना प्रौद्योगिकी आधारित पुस्तकालय सेवाओं के उपयोग की सीमा पाठकों की जागरूकता एवं तकनीकी ज्ञान पर निर्भर करती है।	तालिका 2, तालिका 3, तालिका 5	सेवाओं का नियमित उपयोग सीमित; कभी-कभी/उपयोग नहीं करने वालों का अनुपात अधिक। कर्मचारियों का ज्ञान स्तर अधिकांशतः मध्यम/निम्न। पाठकों की धारणा सकारात्मक होने पर भी उपयोग सीमित।	स्वीकृत
पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव तथा तकनीकी	तालिका 4	वित्तीय संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव, उपकरणों की कमी और उपयोगकर्ता जागरूकता की कमी उच्च प्रतिशत के साथ प्रमुख बाधाएँ।	स्वीकृत



बाधाएँ प्रमुख रूप से प्रभाव डालती हैं।			
--	--	--	--

विश्लेषण

परिकल्पना परीक्षण तालिका से यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि अध्ययन में प्रस्तुत की गई सभी परिकल्पनाएँ एकत्रित आँकड़ों के आधार पर समर्थित पाई गई हैं। प्रथम परिकल्पना के परीक्षण हेतु पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी संसाधनों की उपलब्धता को आधार बनाया गया। संबंधित आँकड़ों से यह संकेत मिला कि विभिन्न पुस्तकालयों में तकनीकी सुविधाओं की स्थिति समान नहीं है। कहीं मूलभूत संसाधन उपलब्ध हैं, तो कहीं उन्नत सुविधाओं का अभाव दिखाई देता है, जिससे पुस्तकालयों के बीच तकनीकी अंतर स्पष्ट होता है।

द्वितीय परिकल्पना के संदर्भ में सेवाओं के उपयोग स्तर, कर्मचारियों के तकनीकी ज्ञान तथा पाठकों की धारणा से संबंधित आँकड़ों को सम्मिलित रूप से देखा गया। इन आँकड़ों से यह ज्ञात हुआ कि सकारात्मक धारणा होने के बावजूद सेवाओं का नियमित उपयोग सीमित है, जिसका संबंध जागरूकता एवं तकनीकी दक्षता से जोड़ा जा सकता है। तृतीय परिकल्पना के परीक्षण में विभिन्न समस्याओं और बाधाओं को आधार बनाया गया, जिनमें संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव और तकनीकी कठिनाइयाँ प्रमुख रूप से उभरकर सामने आईं। इस प्रकार यह तालिका अध्ययन की परिकल्पनाओं और प्राप्त आँकड़ों के बीच संबंध को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से दमोह ज़िले के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के स्तर एवं उसके उपयोग की सीमा से संबंधित विभिन्न पहलुओं का समग्र रूप से अध्ययन किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सूचना प्रौद्योगिकी ने पुस्तकालय सेवाओं को अधिक संगठित, त्वरित और उपयोगकर्ता-केन्द्रित बनाने की क्षमता प्रदान की है, किंतु इसका प्रभावी क्रियान्वयन सभी पुस्तकालयों में समान रूप से नहीं हो पाया है। ज़िले के कुछ पुस्तकालयों में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता अपेक्षाकृत बेहतर पाई गई, जबकि अनेक पुस्तकालय अभी भी सीमित सुविधाओं के साथ कार्य कर रहे हैं।



अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सेवाएँ उपलब्ध होने के बावजूद उनका उपयोग अपेक्षित स्तर तक नहीं हो रहा है। इसके पीछे उपयोगकर्ताओं की जागरूकता, तकनीकी ज्ञान तथा पुस्तकालय कर्मचारियों की दक्षता जैसे कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अधिकांश पुस्तकालय कर्मचारियों का तकनीकी ज्ञान मध्यम अथवा निम्न स्तर का पाया गया, जिससे उपलब्ध संसाधनों का पूर्ण उपयोग संभव नहीं हो पाता। यह स्थिति पुस्तकालयों में निरंतर प्रशिक्षण और क्षमता विकास की आवश्यकता को दर्शाती है।

अध्ययन में सामने आई समस्याओं से यह स्पष्ट होता है कि वित्तीय संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव, तकनीकी उपकरणों की सीमित उपलब्धता तथा प्रशासनिक सहयोग की कमी सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग में प्रमुख बाधाएँ हैं। इन समस्याओं के कारण पुस्तकालयों में तकनीकी सेवाओं का विस्तार और स्थायित्व प्रभावित होता है। इसके बावजूद, पाठकों की धारणा से यह संकेत मिलता है कि सूचना प्रौद्योगिकी को सामान्यतः उपयोगी माना जाता है, जो भविष्य में इसके बेहतर उपयोग की संभावनाओं को दर्शाता है।

समग्र रूप से यह अध्ययन यह दर्शाता है कि दमोह ज़िले के पुस्तकालय तकनीकी परिवर्तन के संक्रमण काल में हैं। यदि पुस्तकालयों को पर्याप्त संसाधन, प्रशिक्षित मानव शक्ति और संस्थागत सहयोग प्राप्त हो, तो सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से उनकी सेवाओं की गुणवत्ता और पहुँच में उल्लेखनीय सुधार किया जा सकता है। यह अध्ययन जिला स्तर के पुस्तकालयों की वास्तविक स्थिति को समझने में सहायक सिद्ध होता है तथा पुस्तकालय विकास से जुड़े प्रयासों के लिए एक तथ्यात्मक आधार प्रदान करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जुचनेविच एल. बदलते समाज में लाइब्रेरी की भूमिकाएँ। समकालीन समाज में सामाजिक परिवर्तन। 2014;2:120-30।
2. कैस्टेल्स एम. सूचना युग। ब्लैकवेल पब्लिशर्स: ऑक्सफ़ोर्ड; 1996।
3. श्री ओसी, श्री टीवार्डि. नवाचार प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके लाइब्रेरी और सूचना सेवाओं की डिलीवरी में बदलाव।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

4. खान एयू, रफी एम, झांग जेड, खान ए. लाइब्रेरी सेवाओं में उपयोगकर्ता संतुष्टि और विश्वास पर तकनीकी आधुनिकीकरण और प्रबंधन क्षमताओं के प्रभाव का निर्धारण। ग्लोबल नॉलेज, मेमोरी एंड कम्युनिकेशन। 2023 जुलाई 25;72(6/7):593-611।
5. दत्ता सी. कोलकाता महानगर के शहरी, औद्योगिक और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में पाँच विशिष्ट इलाकों में सूचना साक्षरता क्षमता और पाठक अध्ययन। 2008।
6. मोहसेनज़ादेह एफ, इस्फ़ैद्यारी-मोगद्दाम ए. अकादमिक पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकियों का अनुप्रयोग। द इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी। 2009 नवंबर 13;27(6):986-98।
7. यादव जीएस. मध्य प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र में पानी की कमी का अनुमान: एक अंतर-जिला विश्लेषण। इंट. जे. एप्लाइड सोश. साइंस। 2020;7:524-37।
8. हैदर एमएस, या सी. प्रौद्योगिकी के युग में मेडिकल छात्रों के सूचना साक्षरता कौशल और सूचना-खोज व्यवहार का मूल्यांकन: पाकिस्तान का एक अध्ययन। इन्फॉर्मेशन डिस्कवरी एंड डिलीवरी। 2021 फरवरी 18;49(1):84-94।
9. पाटिल डीटी. विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग। अशोक यक्काल्देवी; 2020 सितंबर 23।
10. वासिलकाकी ई, मोनारौ-पापाकॉन्स्टेंटिनौ वी. एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा जो पुस्तकालय और सूचना पेशेवरों की उभरती भूमिकाओं के बारे में बताती है। न्यू लाइब्रेरी वर्ल्ड। 2015 जनवरी 12;116(1/2):37-66।
11. माकरी एस, ब्लैंडफोर्ड ए, गो जे, रिमर जे, वारविक सी, बुकानन जी. एक पुस्तकालय या सिर्फ एक और सूचना संसाधन? पारंपरिक और डिजिटल पुस्तकालयों के उपयोगकर्ताओं के मानसिक मॉडल का एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ़ द अमेरिकन सोसाइटी फॉर इन्फॉर्मेशन साइंस एंड टेक्नोलॉजी। 2007 फरवरी 1;58(3):433-45.
12. रियल बी, बर्टोट जेसी, जेगर पीटी. ग्रामीण सार्वजनिक पुस्तकालय और डिजिटल समावेशन: मुद्दे और चुनौतियाँ। सूचना प्रौद्योगिकी और पुस्तकालय। 2014 मार्च 25;33(1):6-24.
13. कुरैशी आई, सटर सी, भट्ट बी. गरीबी और सामाजिक असमानता के माहौल में ज्ञान साझा करने की परिवर्तनकारी शक्ति। संगठन अध्ययन। 2018 नवंबर;39(11):1575-99.